Gwalior Dhwani

Gwalior Diocesan News Bulletin
July 2022 Vol. 3/ Book 7

3rd July- St. Thomas, Apostle of India

16th July- The BVM of Mount Carmel

26th July- Ss. Joachim & Anna

28th July- St, Alphonsa Muttathupadathu

St. Thomas

St. Alphonsa

Ss. Joachim & Anna

Gwalior Dhwani
Diocesan News Bulletin

Most Rev Bishop
Joseph Thykkattil
(Patron)

Editorial Board
Rev. Fr. Johnson B. Maria
Rev. Fr. C. Alphonse
Rev. Fr. Isaac Akash
Mrs. Roseline Sikarwar

Address
'Karuna'
Bishop's House
Jonagar, Kheriya Modi, Morar
Gwalior – 474006

gwaliordhwani@gmail.com

(For private Circulation only)

Celebrations July 2022

03. Fr. Thomas K OSB (F)
Fr. Thomas T. OCD (F)
04. Fr. Isaac Akash (O)
12. Fr. Nabor Lakra OSB (B)
27. Fr. Simon Raj (B)
31. Fr. A Gilbert (B)

July 2022
Holy Father's Universal Intention:
For the elderly
We pray for the elderly, who represent the roots and memory of a people: may their experience and wisdom help young people to look towards the future with hope and responsibility

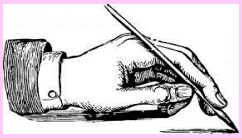

Editorial

ग्वालियरग्वालियर में देर से ही सही, मानसून ने अब दस्तक दे ही दी है। इसी के साथ न केवल तापमान में गिरावट आई है बल्कि धरती पर हरियाली की चादर बिछना शुरू हो गया है। यह समय पौधे लगाने का सर्वोत्तम समय है। चारों तरफ पौधों की नई-नई पत्तियां फूट रहीं हैं, नई घास उग रही है, जो पेड़-पौधे गर्मी से झुलस रहे थे उन्हें नई ज़िंदगी मिल गई है। ऐसा लग रहा है जैसे चारों नए जीवन का महोत्सव हो। इस महोत्सव में पौधे लगाकर हमें भी अपना योगदान देना है। आपसे ग्वालियर ध्वनि की विनम्र अपील है कि आप इस बरसात में पौधे लगाने का प्रण लें और दूसरों को भी ढेर सारे पौधे लगाने के लिए प्रेरित करें।

संसार भर की कलिसिया में जुलाई का महिना कई बड़े-बड़े त्यौहारों के लिए जाना जाता है। 3 जुलाई को भारत के प्रेरित संत थॉमस का पर्व है। अगर संत थॉमस दो हजार साल पहले प्रभु येशु के सुसमाचार को लेकर नहीं आते तो शायद मुझे और आपको प्रभु येशु के बारे में जानने का सौभाग्य नहीं मिलता। उनके पहली सदी में भारत आने के केरल और तमिलनाडु में पुख्ता सबूत मिले हैं। अपने धर्मप्रांत में टेकनपुर में सेंट थॉमस के नाम से चर्च और स्कूल है, इसलिए वहाँ के पुरोहित फादर लूर्दनाथन एवं सभी पल्लीवासियों के विशेष प्रार्थना करेंगे। 6 जुलाई को संत मरिया गोरेती का पर्व है। संत मरिया गोरेती पवित्रता की प्रतिमूर्ति और आदर्श थीं।

11 जुलाई को संत बेनेडिक्ट का पर्व है। संत बेनेडिक्ट शिवपुरी आश्रम के फादर लोगों के संरक्षक संत हैं। संत बेनेडिक्ट ने आश्रम जीवन के लिए आदर्श जीवन की नियम पुस्तिका बनाई। उन्होंने आश्रम वासियों के लिए एक नया नारा दिया – "ओरा एत लबोरा" अर्थात प्रार्थना और परिश्रम। संत याकूब जिनका पर्व हम 25 जुलाई को मनाते हैं, उन्होंने भी कुछ ऐसा ही कहा था। उन्होंने कहा कि हमारा विश्वास भले कार्यों के साथ ही सार्थक है। भले कार्यों के बिना विश्वास अधूरा है और विश्वास के बिना भले कार्य निरर्थक हैं।(देखें संत याकूब का पत्र 2:14-17)। उसी तरह से आध्यात्मिक कार्य और परिश्रम दोनों जरूरी हैं। कोई व्यक्ति चाहे कितना भी धार्मिक हो लेकिन अगर उसके कार्य बुरे हैं तो उसका धार्मिक होना व्यर्थ है, उसी तरह से यदि कोई व्यक्ति कितने भी भले कार्य करता हो, लेकिन यदि वह ईश्वर में विश्वास नहीं करता तो उसके भले कार्य व्यर्थ हैं। इन्हीं दुआओं और शुभकामनाओं के साथ कि हमारा जीवन हमारे विश्वास के अनुसार हो!

ग्वालियर ध्वनि की ओर से
फादर जॉनसन बी. मरिया

Shepherd's Voice

July, 2022

Dear Fathers, Sisters Brothers and Lay Faithful,
Jai Yesu

1. We thank God for the fall in the burning temperature and the little shower we have already received, we continue for sufficient rain in our region.
2. St. Thomas, one of the twelve Apostles of Jesus came to India to proclaim the Good News in 72 A. D. This year we celebrate the 1950th anniversary of this great event in the spirit and history of India.
3. This year the feast of St. Benedict on 11th July gives us an added occasion to rejoice when Bro. Vijay Paul OSB receives the Ordination to Diaconate. On behalf of the whole diocese, I wish a very happy feast to Prior Antony Dante and the community at Shivpuri.
4. We remember and pray for late Bishop Frederick D'Souza of Jhansi Diocese on 12th July of his death anniversary
5. We greet and pray for all the Carmelite Sisters and Fathers of our diocese as we celebrate the feast of Blessed Virgin Mary of Mount Carmel on Saturday 16th of this Month.
6. Holy Father Pope Francis invites us to pray for our grandparents and elderly. Let us celebrate in our diocese the special day of grandparents and elderly on Sunday 24th of July. Make it a joyful day for our elders. Let the children and grandchildren and the parish community plan and celebrate it well. Offer special prayers for the deceased elders of our families. Visit the bed-ridden members of our parish with pleasant surprises for them. Blessing from them worth saving for our future life. Pope Francis Says "the elders represent the roots and memory of a people which will help us to look towards the future with Hope and responsibility."
7. We pray for students, teachers, parents and the management. Most of our schools are opened after the summer vacations. May our children get value-based education; faith in the Creator God, love and respect for parents, teachers and elders. May they grow in the spirit of truthfulness, compassion and mercy. May our children become more and more aware of our responsibilities to take care of our mother Earth, the common home.
8. Wish you healthy rain, celebrate it with planting more trees and by going organic.

Love and prayers

+Joseph Thykkattil

BISHOP'S ENGAGEMENTS: JULY 2022

03rd –Annual Parish Feast, Tekanpur.
10th – Annual Parish Feast, Dabra.
11th- Diaconate of Br.Vijay Paul OSB, Shivpuri.
16th -Clergy Monthly Spiritual Recollection, Lashkar.
24th- World Day for Grandparents and Elderly.
30th- Blessing of the Convent and Health –care Center, DSH, Kheraghat.
31st Vianney Mass Center, Purani Chhawni Gwalior.

संत पापाः बुजुर्गावस्था जीवन का अति संवेदनशील

संत पापा फ्रांसिस ने संत योहन, सुसमाचार के अंतिम भाग पर चिंतन करते हुए, बुधवारीय धर्मशिक्षा माला में बुजुर्गों और युवाओं के बीच कोमल संबंध पर प्रकाश डाला।

दिलीप संजय एक्का-वाटिकन सिटी

वाटिकन सिटी, बुधवार, 22 जून 2022 (रेई) संत पापा फ्रांसिस ने अपने बुधवारीय आमदर्शन समारोह के अवसर पर संत पेत्रुस महागिरजाघर के प्रांगण में एकत्रित सभी विश्वासियों और तीर्थयात्रियों को संबोधित करते हुए कहा: 'प्रिय भाइयो एवं बहनो, सुप्रभात।'

बुजुर्गों पर अपनी धर्मशिक्षा माला में, आज हम पुनर्जीवित येसु और पेत्रुस के बीच हुई वार्ता पर चिंतन करेंगे जो योहन के सुसमाचार का अंतिम भाग है (21.15-23)। यह एक हृदयस्पर्शी वार्ता है जहाँ हम येसु के प्रेम को उसके सभी शिष्यों, खासकर पेत्रुस और सारी मानवता के लिए चमकता हुआ पाते हैं। यह एक सुकोमल संबंध है जो उदासी भरी नहीं, वरन सीधी, मजबूत, स्वतंत्र और अपने में खुली है। सारी मानवता के संग यह एक सच्चाई का संबंध है। योहन का सुसमाचार अपने में अति आध्यात्मिक, अति उन्नत एक मार्मिक आग्रह के साथ खत्म होता है। यह हमारे लिए येसु और पेत्रुस के बीच प्रेम को उजागर करता है जो स्वाभाविक रूप में उनके मध्य एक वार्ता का सममिश्रण है। सुसमाचार लेखक हमें सचेत करते हैं कि वे हमारे लिए जीवन की वास्तविकताओं में सच्चाई का एक साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं (यो.21.24),जिनमें हमें सच्चाई को खोजने की आवश्यकता है।

येसु के संग हमारा संबंध

हम अपने में यह पूछ सकते हैं कि क्या येसु और शिष्यों के बीच संबंध की यह कोमलता हम अपने में पाते हैं, जो उनकी शैली के अनुरूप एकदम खुली, सुस्पष्ट, प्रत्यक्ष और मानवीय रुप में एकदम वास्तविक है? येसु के संग हमारा संबंध कैसा है? क्या यह शिष्यों की भांति है? क्या हम बहुधा सुसमाचार के साक्ष्य को एक "मीठे" रहस्य की भांति व्यक्त करने के प्रलोभन में नहीं पड़ते जाते, जो हमारे जीवन की परिस्थिति को महिमामंडित करने की कोशिश करता हो? यह व्यावहार, जो हमारे लिए सम्मान-सा लाता है, वास्तव में हमें येसु ख्रीस्त से दूर कर देता, यहां तक कि यह अपने में एक अति अमूर्त अवसर हो जाता है, जहाँ व्यक्तिगत हवाला देते हुए, हम अपने विश्वास को एकदम दुनियावी रुप में जीते हैं। यह येसु का मार्ग नहीं है। येसु ईश्वर के शरीरधारी वचन हैं जो मानव के रुप में पेश आते हैं। वे हम से मनुष्य के रुप में, अपनी कोमलता, मित्रता

और निकटता में बातें करते हैं। वे हमें अपने को मिठास स्वरुप में प्रस्तुत नहीं करते बल्कि वे हमारे निकट रहते हैं।

बुजुर्गावस्था और समय ढ़लना

संत पापा ने कहा कि पेत्रुस के संग वार्ता में हम दो तथ्यों को पाते हैं, वे बुजुर्गावस्था और समय ढ़लने के बारे विशेष रुप से कहते हैं। प्रथम भाग में हम पेत्रुस को, येसु की चेतावनी के बारे में सुनते हैं, जवानी में तुम आत्मनिर्भर थे, बुजुर्गावस्था में तुम स्वयं और अपने जीवन के मालिक नहीं रहोगे। बुजुर्गावस्था में हम व्हीलचेर का उपयोग करने लगते हैं, हमारा जीवन ऐसा ही है। अपनी बुजुर्गावस्था में हम बीमारियों के शिकार हो जाते जिन्हें हमें स्वीकारने की जरुरत है। हममें युवाओं की भांति शक्ति नहीं रह जाती है। हमारा जीवन साक्ष्य भी बुजुर्गावस्था की कमजोरी संग आगे बढ़ेंगे। संत पापा ने कहा कि हमें अपने जीवन की कमजोरी, बीमारी और मृत्यु में भी येसु का साक्ष्य देना है। इन पदों के बारे में लोयोला के संत इग्नासियुस एक बहुत सुन्दर बात कहते हैं,"येसु के शिष्यों रुप जैसे हम जीवन में उनका साक्ष्य देते वैसे ही हमें मृत्यु में भी उनका साक्ष्य देना है"। अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक हमें येसु का शिष्य बने रहने की जरुरत है जैसे कि ईश्वर हमें अपनी आयु के अनुरूप बातें करते हैं। सुसमाचार लेखक अपनी व्याख्या देते हुए कहते हैं कि येसु पेत्रुस की चरम साक्ष्य, शहादत और मृत्यु की ओर इंगित करते हैं। लेकिन हम इन पदों के सामान्य अर्थ को समझ सकते हैं कि हमारे जीवन में ख्रीस्त का अनुसरण हमारी कमजोरी, असहायता की स्थिति, दूसरों पर निर्भरता के द्वारा सीखते हुए परिष्कृत हो। येसु के अनुसरण हेतु हमारा विवेक हमारे विश्वास में कायम रहता है। "प्रभु आप जानते हैं मैं आप को प्रेम करता हूँ" (15.16.17) यहाँ तक की हमारे जीवन की कमजोरी और बुढ़ापे की परिस्थितियों में भी। येसु का अनुसरण सदैव बना रहता है, हमारे अच्छे स्वास्थ्य में, हमारी बीमारी में, आत्म-निर्भरता में, हमारी आत्म-निर्भरता की कमी में, लेकिन हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम सदैव उनके पीछे चलें। संत पापा ने कहा कि मैं बुजुर्गों की आंखों में आंखें मिलाकर बातें करना पसंद करता हूँ, जो चमकती हैं, वे आंखें शब्दों से अधिक बोलती हैं, वे जीवन का साक्ष्य देती हैं। यह कितना अच्छा है, हमें इसे जीवन के अंत तक बनाये रखना है। हमें जीवन भर येसु का अनुसरण करना है।

हमारी कमजोरी, हमारी मजबूती

पेत्रुस के संग येसु की यह वार्ता शिष्यों के लिए, हम सब विश्वासियों के लिए एक मूल्यवान शिक्षा है। यह बुजुर्गों के लिए भी महत्वपूर्ण है। हम अपनी कमजोरी के क्षणों में जीवन का साक्ष्य देने हेतु सीखते हैं। जीवन की ऐसी परिस्थिति में हम अपने विश्वास को मजबूत होता पाते हैं, जीवन की ऐसी परिस्थितियों में भी येसु हमारे साथ रहते हैं, जहाँ हम जीवन की राह में अपने विश्वास की समृद्धि को पाते हैं।

संत पापा कहते हैं कि हमें पुनः अपने से पूछने की जरुरत है, क्या हममें एक आध्यात्मिकता है जो हमारे जीवन की उन परिस्थितियों को सही अर्थ में परिभाषित करता हो, जहां हम अपनी शक्ति पर आत्म-निर्भर रहने के बदले अपने को दूसरों में निर्भर पाते हैं? हम अपने जीवन की

इन परिस्थितियों- समर्पित प्रेम, न्याय की चाह में पहल, कमजोरी के समय आश्रित रहना, जीवन को विदा कहने के क्षणों, जीवन में नेतृत्व से दूर रहने की स्थिति में कैसे निष्ठावान बने रहते हैं? यह अपने में सहज नहीं है।

येसु का अनुसरण

जीवन का यह नया मोड़ हमारे लिए निश्चय ही परीक्षा की एक घड़ी होती है। हम अपनी बुढ़ापे में नेतृत्व को धारण किये रखना चाहते हैं। अपनी बुजुर्गावस्था को स्वीकारने के द्वारा हम नेतृत्व में विराम लाते हैं। वहीं हम परिवार में, समाज में, मित्रमंडली में अपनी उपस्थिति को दूसरे रूपों में व्यक्त करते हैं। यह उत्सुकता पेत्रुस के लिए भी आती है। पेत्रुस उस शिष्य की ओर देखते हुए जिसे येसु प्रेम करते थे कहते हैं,"प्रभु इनका क्या होगा?" क्या उसे मेरा "अनुसरण" करने की जरुरत है? क्या वह "मेरा" स्थान लेगा? क्या वह मेरा उत्तराधिकारी होगा? येसु स्पष्ट रुप में उसे कहते हैं,"इससे तुम्हें क्या? तुम मेरा अनुसरण करो"। तुम दूसरों की चिंता किये बिना अपने जीवन की राह में बढ़ते चलो। हमारे लिए यही आवश्यक है, हम अपने सम्पूर्ण जीवन में, जीवन के हर क्षण में येसु ख्रीस्त का अनुसरण करें। जब हम दूसरों के जीवन में ताक-झांक करने लगते तो येसु हमेंसे कहते हैं, "इससे तुम्हें क्या? तुम मेरा अनुसरण करो।" यह कितना सुन्दर है। बुजुर्गों को इस बात से ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए कि युवाजन हमारी राह में चल रहे हैं, हमारा स्थान ले रहे हैं, हमसे आगे बढ़ते जा रहे हैं। अपनी वफादारी में प्रेम की शपथ लेना, विश्वास के कारण निष्ठा में बने रहना, यहां तक कि उन परिस्थितियों में भी जहाँ वे अपने जीवन को अलविदा कहने के करीब आते हैं, यह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रशंसा का विषय होती और इसके लिए बुजुर्ग ईश्वर का आभार व्यक्त करते हैं। विदा लेने हेतु सीखना, बुजुर्गों की प्रज्ञा है। संत पापा ने कहा कि उन्हें चाहिए कि वे आनंदपूर्ण अपने जीवन से विदा लें। "मैंने अपना जीवन जीया, मैं अपने विश्वास में कायम रहा, मैं पापी था फिर भी मैंने अच्छे कार्य किये" यह कहना एक बुजुर्ग के लिए कितना सुन्दर है। विदाई के समय यह बुजुर्गों में शांति लाती है।

बुजुर्गों को निहारें

यहां तक कि जबरदस्ती निष्क्रिय अनुसरण करना, जो उत्साहमय चिंतन और प्रभु के वचन को सुनने से आता है- जैसे कि लाजरूस की बहन मरियम ने किया- बुजुर्गों के जीवन का सबसे अच्छा हिस्सा बनता है। यह हमसे कभी छीना नहीं जायेगा (लूका. 10.42) । संत पापा ने कहा कि हम बुजुर्गों की ओर देखें और उनकी मदद करें जिससे वे अपनी प्रज्ञा को जी सकें और उस सुन्दरता और अच्छाई को हमें सौंप सकें। हम उनकी सुनें। उन्होंने बुजुर्गों को युवाओं की ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखने का आह्वान किया जिससे वे बोयी गई चीजों को आगे ले सकें। एक बुजुर्ग युवा को देखे बिना और युवाजन बुजुर्गों को ओर निहारे बिना अपने में खुशी का अनुभव नहीं कर सकते हैं।

UCPI meeting with Priests of Gwalior Diocese on 02/06/2022 at Vianney Bhavan

Tribal empowerment programme in Karhal by Social work

Children received Jesus for the first time. Most. Rev. Joseph Thykkattil, Bishop of Gwalior, was the main celebrant. Msgr. Rev. Lawrence D'Souza, Fr. Gilbert the parish priest, participation of many priests, religious and parishioners from neighboring parishes made the event very prayerful and celebrative. Rev. Fr. Gilbert and Sisters of St Mary's convent, Mohna worked hard and arranged everything well. The children of the parish displayed a beautiful cultural programme after the liturgy.

संत योहान बपतिस्ता का महा पर्व शुक्रवार शाम **5:30** संत जॉन कथीद्रल लश्कर में मनाया।**15** जून से चल रहे प्रभु येशु मसीह के अग्रदूत, संत योहन के आदर में नौ दिवसीय नवीना के साथ **24** जून को समाप्त हुई। इस अवसर पर ग्वालियर धर्म प्रांत के धर्माध्यक्ष जोसफ थायकाटिल, फा. चिपसन फा. जॉन केदारी एवं धर्मप्रांत के पुरोहितों द्वारा मिस्सा बलिदान अर्पित किया गया । मिस्सा के पश्चात् ध्वज उतारते हुए संत योहान बपतिस्ता का महा पर्व मनाया गया।

12th to 15th of June 2022 Life Orientation Program was conducted in St. Michael's Church, Bhind by Diocesan Youth Commission &YCS/YSM under the leadership of Fr. Lourdu Nathan.

Rev. Fr. Arokia Doss is welcomed in St. Kolbe Mission, Indergarh.

Welcomed Rev. Fr. Dilip Nanda, the new Mission Incharge to Mother Teresa Mission, Bhitarwar

Bishop's visit to St. Sebastian Church Khaniyadhana.

The Diocesan priests of the diocese of Gwalior experienced a resourceful and happy two days, stay at Karuna, Bishop's House, Gwalior. It was the idea of the shepherd of the Diocese, Rt. Rev. Joseph Thykkattil to gather all the clergy of the Diocese together for a few days and call it; Live-Together, in order to enhance the fraternal unity among the clergy and to be equipped with new vigor and enthusiasm. The one who facilitated the programme was the Archbishop of Bhopal His Grace Most Rev. Dr. A. A. Sebastian Durairaj SVD. The programme was lively through interactive sessions, discussions and workshops etc., The Fathers lived together two days by praying together, dining together, enjoying jokes together etc.….

Renovation of three houses at Manav Kusta Ashram Gwalior by Caritas Gwalior and Devendre Kulshreshth.

Caritas Gwalior

Summer Samaritan Services - water cooler - for a needy family from Caritas Gwalior

17 जून 2022 को **Bro. Prakash Yadav OSB** ने जीवन ज्योति आश्रम शिवपुरी में अपना पहला व्रत- धारण किया, मिस्सा के दौरान फादर एंथोनी (प्रायर) ने उनको व्रत धारण की प्रतिज्ञाएं दिलाई, इसमें कम्युनिटी के अन्य फादरगण भी उपस्थित रहे।

In loving memory of

Mrs. Rosary (83)
maternal grandmother of
Fr. Sebastian K C, OCD

Gwalior Catholic Seva Samaj

Tribal empowerment in Karahal block by Gwalior Catholic Seva Samaj

सन्त बेनेदिक्त
(पर्व दिवस 11 जुलाई)

बेनेदिक्त का जन्म उत्तरी इटली के नर्सिया नगर में सन् 480 ई. के करीब हुआ। उनकी एक जुड़वा बहन थी जिसका नाम स्कोलास्टिका था। उनके माता पिता दोनों ही बड़े धर्मपरायण तथा तपस्वी थे। फलस्वरूप बेनेदिक्त और स्कोलास्टिका दोनों बचपन से ही अपने माता-पिता का अनुकरण करते हुए अपने दैनिक कार्यों में ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते थे।

बेनेदिक्त बाल्यावस्था से ही अध्ययन के लिए रोम भेजे गये। किन्तु वहाँ अध्ययन करते हुए जब उन्होंने विद्यार्थियों का बद-चलन तथा नगर के अनैतिक वातावरण को देखा, तब उन्हें बड़ा दुःख हुआ। इसलिए करीब सोलह वर्ष की अवस्था में अपनी पढ़ाई समाप्त किये बिना ही वे विद्यालय छोड़ कर चले गये, और अपने माता-पिता, प्यारी बहन एवं पैतृक सम्पत्ति को त्याग कर रोम नगर से कुछ दूर किसी गाँव में रह कर प्रार्थना एवं मनन-चिन्तन करने लगे। कुछ काल बाद वे सुबियाको पहाड़ी की एकान्त गुफा में चले गये और वहाँ पापियों के मन परिवर्तन तथा मानव-मुक्ति के उद्देश्य से तपस्या एवं प्रार्थना में दिन बिताने लगे। वहाँ आस-पास के प्रदेश वाले लोगों के बीच उनकी पवित्रता की ख्याति फैल गयी और कुछ लोग उनके शिष्य बन गये। इस पर बेनेदिक्त ने वहाँ एक मठ की स्थापना की, और उन्हें उत्तम ख्रीस्तीय जीवन की शिक्षा देने लगे। वे उनसे कहते, "हमें अपने जीवन में प्रभु येसु ख्रीस्त का अनुसरण करना है। बेनेदिक्त ने बालकों व युवकों की शिक्षा के लिए विद्यालयों की स्थापना की जिसमें रोम नगर के कुलीन परिवारों के बालक भी पढ़ने के लिए आने लगे। उनकी बहन स्कोलास्टिका ने भी अपने भाई का अनुसरण किया और सुबियाको से कुछ दूर प्रार्थना एवं तपस्या का जीवन बिताने लगी। किन्तु बेनेदिक्त की बढ़ती प्रसिद्धि को देख कुछ अन्य मठवासी उनसे ईर्ष्या करने लगे। अतः बेनेदिक्त ने वहाँ का कार्य-भार कुछ लोगों को सौंप दिया और अपने शिष्यों के साथ रोम के दक्षिण में स्थित 'मोंते कसिनो' की पहाड़ी पर चले गये। वहाँ उन्होंने एक नया मठ स्थापित किया और मठवासीय जीवन की एक नयी प्रणाली प्रारम्भ की। मोंते कसिनो का यह मठ सन्त बेनेदिक्त के मठवासियों के मातृ-भवन के रूप में आज भी विश्व प्रसिद्ध है। जब बेनेदिक्त मोंते कसिनो गये, तब स्कोलास्टिका भी उनके साथ गयी और अपने भाई के मठ से कुछ दूर, उनकी देख-रेख में महिलाओं के लिए एक मठ की स्थापना की; और बेनेदिक्त के बनाये नियमों के अनुसार सामूहिक रूप से संन्यास जीवन बिताना प्रारम्भ किया। इस प्रकार कलीसिया के इतिहास में प्रथम बार स्कोलास्टिका ने महिलाओं के लिए संघीय जीवन की नींव डाली।

सन्त बेनेदिक्त यूरोप के संरक्षक सन्त माने जाते हैं। 11 जुलाई को उनका पर्व मनाया जाता है।

To the respectable nurses of the Diocese of Gwalior

Dear Nurses! I am privileged to have been appointed, by his Lordship Bishop Joseph Thykkattil, as spiritual director of the Catholic Nurse's Guild in Gwalior Diocese. I am grateful.

To start thinking about this wonderful nursing profession, we can start gathering thoughts on the following words, which you may have come across sometime that: "a broken body-isn't a broken person." As a matter-of fact we all yearn to live a happy and healthy life and we will at any cost do everything possible to achieve that end. Some of you may have heard the song of Michael Joseph Jackson, the famous Pop singer, which was played in the renowned orchestra of the great conductor, Andre Rieu. The song goes like this "heal the world, make it a better place for you and for me, and the entire human race, there are people dying if we care enough for the living, make it a better place for you and for me"

Dear nurses, you are the healing hands of Christ in a sick and broken world in hospitals, in nursing homes, for aged men and women who look to you with hope in their eyes. I am not as enlightened a person as you all are, and the reason is because you face life and death from very close quarters, as a nurse once told me "Father, in the hospital we get to know the patient, we begin to understand him or her, gradually we begin to love them, and then suddenly we lose them through death" Well dear nurses, this patient is the "suffering Christ," who looks to you with hope to gather his broken bones into one piece as created by God. This is your life, dear nurses, your commitment, your vocation and of course your profession.

We will try to communicate more as we come together in a group after a Sunday Mass, whenever possible., this would be done with the help and courtesy of the Parish Priests of various Parishes, who will kindly let me know the number of nurses in their Parish, working in the hospitals.

I presume we have a good number of catholic nurses, senior and junior working in the hospital. I am sure you all must be getting some spiritual guidance from the priests in that particular Parish. I will be too happy to seek guidance from the priest who are imparting spiritual guidance to the nurses.

See you dear nurses! as we keep our communication alive and active.
Bye for now and God bless you and your loving family.

Sincerely
Fr. John Cajetan Kedari
(Spiritual Director: Nurses Guild, Gwalior Diocese)

CARITAS GWALIOR

IS A HUMBLE DIOCESAN EFFORT TO RAISE RESOURSES TOWARDS SOCIAL WELFARE ACTIVITIES

Even the poorest of the poor can be a part of this

Remember the needy and contribute to **CARITAS GWALIOR** especially of the times of celebrations: Marriage, Feast, First Holy Communion, Confirmation, Jubilee, Baptism, Success in Exams, Getting a Job, New House, Parish Feast, Pastoral Visitation etc.

June -2022

1. Mr. Manu Alunkal ..... Rs 5,000/-
2. Mr. George Thykkattil P. ..... Rs 2,500/-

Send your valuable contribution to

Account Name: Caritas Gwalior
A/C No.945420110000348
Bank: Bank of India
Morar, Gwalior
IFSC: BKID0009454
MICR: 474013005

Three houses of Mrs. Leela Tivari, Mrs. Chandravati Channis and Mrs. Phulo Devi is being renovated and re - constructed at Manav Seva Kusht Ashram Gwalior

Please WhatsApp a copy of your 'id proof' and amount to the Financial Administrator's contact number:8462963204 for accounting purpose, thank you

With sincere thanks, Financial Administrator

Mass Reading: July 2022

Sunday	Monday	Tuesday	Wednesday	Thursday	Friday	Saturday
31 18TH SUN ORD ECCL 1: 2, 2: 21 COL 3: 1-5,9-11 LK 12: 13-21					1 AMOS 8: 4-6,9-12 MT 9: 9-13	2 AMOS 9: 11-15 MT 9: 14-17
3 ST. THOMAS ACTS 10: 24-35 LN 20:24-29	4 HOS 2: 14, 15 MT 9: 18-26	5 ST. ANTHONY ZACCARIA HOS 8: 4-7 MT 9: 32-38	6 HOS 10: 1-3 MT 10: 1-7	7 HOS 11: 14 MT 10: 7-15	8 HOS 14: 1- 9 MT 10: 16-23	9 SS. AUGUSTINE &COMP IS 6: 1-8 MT 10: 24-33
10 15TH SUN IN ORD DEUT 30: 10-14 COL 1: 1-15-20 LK 10: 25-37	11 ST. BENEDICT IS 1: 10-17 MT 10: 34-11	12 IS 7: 1-9 MT 11: 20-24	13 IS 10: 5-7 MT 11: 25-27	14 IS 26: 7-9,12,19 MT 11: 28-30	15 ST. BONAVENTURE IS 38: 1-6, 21-22 MT 12: 1-8	16 THE BVMOF MOUNT CARMEL ZECH 2: 10-13 MT 12:46-50
17 16TH SUN ORD GEN 18:1-10 COL 1: 24-28 LK 10:38-42	18 MIC 6: 1-4,6-8 MT 12: 38-42	19 MIC 7: 14-15,18 MT 12: 46-50	20 JER 1: 1, 4-10 MT 13: 1-9	21 ST. LAWRENCE JER 2: 1-3,7,8 MT 13: 10-17	22 ST. MARY MAGDALENE 2COR 5: 14-17 JN 20: 1, 2, 11-18	23 JER 7: 1-11 MT 13: 24-30
24 17TH SUN ORD GEN 18: 20-32 COL 2: 12-14 LK 11: 1-13	25 ST. JAMES 2COR 4: 7-15 MT 20: 20-28	26 Ss. JOACHIM & ANNA JER 14: 17B-22 MT 13:36-42	27 JER 15: 10, 16-21 MT 13: 44-46	28 ST. ALPHONSA 2COR 10: 17-11:2 MT 25: 1-13	29 Ss. MARTHA, MARY, LAZARUS 1JN 4: 7-16 JN 11: 19-27	30 JER 26: 11-16,24 MT 14: 1-12